A (Printed Pages 4)

(20622) Roll No. ....

B.A.LL.B. IV-Sem.

NS-3436

B.A.LL.B. Examination, June-2022

HINDI - II

(विधिक संचार एवं हिन्दी भाषा ज्ञान)

(BL - 4002)

(New Course)

Time : Three Hours] *[Maximum Marks : 100*

नोट : **सभी** खण्डों को निर्देशानुसार हल कीजिये।

खण्ड - क

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : **सभी पाँच प्रश्नों के** उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का और उत्तर अधिकतम 75 शब्दों में अपेक्षित है। 5×4=20

1. संरचना की दृष्टि से **वाक्य** के भेदों को उदाहरण सहित बताइये।

P.T.O.

2. निम्नलिखित **वाक्यो को** सयुक्त **वाक्य** मे परिवर्तित **कीजिए**-

   (i) वह लड़का, जो **गाँव** गया था, बीमार हो गया।

   (ii) ज्यों ही शेर **दिखाई** दिया, सब डर गए।

3. निम्नलिखित **शब्दों का हिन्दी** मे अनुवाद कीजिए-

   Petition, Deponent, Verdict, Accuse.

4. निम्नलिखित **शब्दों का** अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए-

   दोषमोचन, **प्रतिवादी, अभिरक्षा**, नज़ीर

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए-

   (i) महात्मा गाँधी का देश सदा आभारी रहेगा।

   (ii) बच्चे को प्लेट में रखकर खाना खिलाओ।

खण्ड - ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है जिसका उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में अपेक्षित है।

2×10=20

6. पल्लवन कीजिए-

   "जिन खोजा तिन पाइया"।

7. उपयुक्त विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।

   सुनो यह क्या हो रहा है अपनी पुस्तको वस्त्रों और

मकान की रक्षा करो यदि नहीं करोगे तो सबसे हाथ धो बैठोगे।

8. निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण एवं उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

वास्तव में मनुष्य स्वयं को देख नहीं पाता। उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को देखते हैं, उसका हृदय दूसरों के दोषों को अनुभव करता है। उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण कर सकती है, किन्तु उसका अपना चरित्र, उसके अपने दोष एवं उसके अवगुण, मिथ्याभिमान और थोथे आत्म-गौरव के काले आवरण में इस प्रकार प्रच्छन्न रहते हैं कि जीवन-पर्यन्त उसे दृष्टिगोचर नहीं होते। इसीलिए मनुष्य स्वयं को सर्वगुण सम्पन्न देवता समझ बैठता है। क्षुद्र व्यक्ति एवं मस्तिष्क अपनी क्षुद्र सीमा से परे किसी भी वस्तु का सही मूल्य आँकने में असमर्थ रहते हैं। इसलिए व्यक्ति स्वयं के द्वारा जितना छला जाता है, उतना किसी अन्य के द्वारा नहीं। आत्म-विश्लेषण करना कोई सहज कार्य नहीं है। इसके लिए अत्यन्त उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यकता होती है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि आत्म-विश्लेषण मनुष्य कर ही नहीं सकता। अपने गुणों-अवगुणों की अनुभूति मनुष्य को सदैव रहती है। अपने दोषों से वह हर पल, हर क्षण अवगत रहता है, किन्तु अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना उसकी दुर्बलता होती है और यही उसे आत्म-विश्लेषण की क्षमता नही दे पाती। उसमें इतनी उदारता और हृदय की विशालता ही नहीं होती कि वह अपने दोषों को स्वयं देखकर कुछ कह सके।

खण्ड - ग

(विस्तृत उत्तरीय प्रश्न)

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है। विस्तृत उत्तर अपेक्षित हैं। $20 \times 3 = 60$

9. 'हासोन्मुख नैतिकता और भारतीय राजनीति' विषय पर लगभग 300 शब्दों का विस्तृत निबन्ध लिखिये।

10. मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा समस्त जिलाधिकारियों को जारी पत्र का प्रारूप प्रस्तुत कीजिए जिसमें स्थानीय कानून-व्यवस्था को बनाए रखने का निर्देश हो।

11. स्थानीय दैनिक पत्र के सम्पादक को पत्र लिखकर अपने नगर की अव्यवस्थित यातायात-व्यवस्था की ओर जन सामान्य का ध्यान आकृष्ट कीजिए।

12. 'बिन पानी सब सून' विषय पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

13. 'नगर में आयोजित हस्तशिल्प प्रदर्शिनी' का प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।